Imam Ahmad Raza Dar e Khwaja Par (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 336
Weekly Booklet : 336

इमाम अह़मद रज़ा दरे ख़्वाजा पर

सफ़ह़ात 24

बरेली शरीफ़ से अजमेर शरीफ़ 04
ख़्वाजा साह़िब का इख़्तियार 10
मज़ारे ख़्वाजा पर आ'ला ह़ज़रत का सिवुम 15
ख़्वाजा साह़िब से ख़ानदाने रज़ा की मह़ब्बत 18

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दावते इस्लामी इन्डिया)

5 रजबुल मुरज्जब 1441 हि. मुताबिक़ 29 फ़रवरी 2020 ई. बरोज़ हफ़्ता मदनी मुज़ाकरे से क़ब्ल शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने दावते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में "आ'ला ह़ज़रत दरे ख़्वाजा पर" के मोज़ूअ़ पर बयान फ़रमाया, जिस की मदद से येह रिसाला नए मवाद के काफ़ी इज़ाफ़े के साथ मुरत्तब किया गया है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **इमाम अह़मद रज़ा दरे ख़्वाजा पर**

सिने त़बाअ़त : रजबुल मुरज्जब **1445** हि., जनवरी **2024** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला **"इमाम अह़मद रज़ा दरे ख़्वाजा पर"**

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए Whatsapp, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

पहले इसे पढ़ें

अल्लाह पाक ने लोगों की हिदायत के लिये अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को भेजा जो लोगों को सिराते़ मुस्तक़ीम (या'नी सीधा रास्ता) दिखाते रहे, ख़ा़तमुन्नबिय्यीन (आख़ि़री नबी) صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तशरीफ़ लाने के बा'द दरवाज़ए नुबुव्वत बन्द हो गया, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان, ताबिई़न फिर तबए़ ताबिई़न के बा'द औलियाए किराम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم ने दुन्या भर में दीने इस्लाम का पैग़ाम आ़म फ़रमाया। कहीं हु़ज़ूर ग़ौसे आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की बरकतों से इस्लाम फैला तो कहीं हु़ज़ूर दाता अ़ली हिज्वेरी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के ज़रीए़ कु़रआनो सुन्नत की ता'लीमात आ़म हुईं, कहीं सुल्ता़नुल हिन्द हु़ज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के ज़रीए़ गुमराहों को राहे हिदायत मिली और कहीं इमामे अहले सुन्नत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने क़ुरआनो सुन्नत की इशाअ़त फ़रमाई। हिन्द के बेताज बादशाह, ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ह़सन सिज्ज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه बर्रे सग़ीर के मश्हूरो मा'रूफ़ बुज़ुर्ग हैं, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! येह किताब आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की बारगाह में ह़ाज़िरियों और आप के साथ अ़क़ीदतो मह़ब्बत भरे वाक़िआ़त और अक़्वाल का मज्मूआ़ है। अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्ता़र क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने चन्द साल क़ब्ल इस मौज़ूअ़ पर बयान फ़रमाया, उसे मज़ीद इज़ाफ़े और तब्दीली के साथ पेश किया जा रहा है। **अल्लाह** करीम हमें औलियाए किराम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم की सच्ची मह़ब्बत और ग़ुलामी नसीब फ़रमाए और क़ियामत में हमें इन के ग़ुलामों में उठाए।

اٰمين بِجاهِ خاتَمِ النَّبِيّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

शो'बा हफ़्तावार रिसाला मुता़लआ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

इमाम अह़मद रज़ा दरे ख़्वाजा पर

दुआए अ़त्तार : **या अल्लाह** पाक ! जो कोई **22** सफ़ह़ात का रिसाला : **"इमाम अह़मद रज़ा दरे ख़्वाजा पर"** पढ़ या सुन ले उसे अपने वलियों का अदब नसीब फ़रमा और उन की ता'लीमात पर अ़मल की तौफ़ीक़ दे और उसे उस के मां बाप समेत बे ह़िसाब बख़्श दे। اٰمين بِجاهِ خاتَمِ النَّبِيّٖن صلى الله عليه واٰله وسلم

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

सहाबिये रसूल, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : जब तुम **अल्लाह** पाक से दुआ़ मांगो तो अपनी दुआ़ में नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद पढ़ो क्यूं कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक तो मक़्बूल ही मक़्बूल है और **अल्लाह** पाक इस से बढ़ कर करीम है कि बा'ज़ को क़बूल करे और बा'ज़ को रद कर दे। (القول البديع، ص420)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

करामते ख़्वाजा ब ज़बाने इमाम अह़मद रज़ा

आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सुल्त़ानुल हिन्द ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के मज़ार से बहुत फ़ुयूज़ो बरकात ह़ासिल होते हैं, मौलाना बरकात अह़मद साह़िब मर्ह़ूम जो मेरे पीरभाई और मेरे वालिदे माजिद رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के शागिर्द थे, उन्हों ने मुझ से बयान किया कि मैं ने अपनी आंखों से देखा कि एक ग़ैर मुस्लिम जिस के सर से पैर तक फोड़े थे, **अल्लाह** ही जानता है कि किस क़दर थे, ठीक

दोपहर को आता और दरबार शरीफ़ के सामने गर्म कंकरों और पथ्थरों पर लोटता और कहता : ख़्वाजा अगन लगी है (या'नी ऐ ख़्वाजा ! जलन मची है, बदन में आग लग रही है) । तीसरे रोज़ मैं ने देखा कि बिल्कुल अच्छा हो गया है । (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 384 मुलख़्ख़सन) बिरादरे आ'ला ह़ज़रत मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बारगाहे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ में अ़र्ज़ करते हैं :

फिर मुझे अपना दरे पाक दिखा दे प्यारे आंखें पुरनूर हों फिर देख के जल्वा तेरा

(ज़ौक़े ना'त, स. 28)

मुझे अजमेर शरीफ़ ह़ाज़िरी देनी है

बुरहाने मिल्लत, ह़ज़रते मुफ़्ती मुह़म्मद अ़ब्दुल बाक़ी रज़वी जबलपूरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते मौलाना अ़ब्दुस्सलाम जबलपूरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने सय्यिदी व मुर्शिदी, आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को 1905 ई. में दूसरे सफ़रे ह़ज से वापसी पर बम्बई में जबलपूर (शह्र तशरीफ़ लाने) की दा'वत पेश की तो मेरे आक़ा, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : "अभी मुझे अजमेर शरीफ़ ह़ाज़िरी देनी है", अजमेर शरीफ़ ह़ाज़िरी देता हुवा बरेली जाऊंगा । اِنْ شَآءَ الله फिर कभी जबलपूर आऊंगा । (इक्रामे इमाम अह़मद रज़ा, स. 78, 82)

उ़र्से ख़्वाजा पर बयान

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को ख़्वाजए ख़्वाजगान, सुल्तानुल हिन्द, ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से बेह़द अ़क़ीदत थी, आप ने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की बारगाह में ह़ाज़िरी भी दी है बल्कि क़ाबिले ए'तिमाद तारीख़ी किताबों से येह साबित है कि

बयाने रज़ा की कशिश

सुल्तानुल हिन्द ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ के मज़ारे पुर अन्वार पर उ़र्स में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ का बयान हुवा करता था और इस बयान का एहतिमाम ख़ुद मज़ार शरीफ़ के "दीवान साहिब (या'नी मुशीर साहिब)" किया करते थे, इस बयान को सुनने के लिये दूर दूर से बड़ी ख़ल्क़त (या'नी अ़वाम) और उ़लमाए किराम बल्कि बा'ज़ दफ़्आ़ दक्कन के हुक्मरान भी आते थे। (मआ़रिफ़े रज़ा सालनामा, 1983, स. 157)

बरेली शरीफ़ से अजमेर शरीफ़

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ की मुबारक ज़िन्दगी के आख़िरी दिनों "अजमेर शरीफ़ के सफ़र" का एक और ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ अ़ल्लामा नूर अह़मद क़ादिरी, अपने दादा, मुरीदे आ'ला ह़ज़रत, ह़ाजी अ़ब्दुन्नबी क़ादिरी रज़वी رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ की ज़बानी बयान करते हैं :

इस मरतबा जब आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ बरेली शरीफ़ से अजमेर शरीफ़ उ़र्से ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ में ह़ाज़िरी के लिये जाने लगे तो आप के साथ दस ग्यारह मुरीदीन भी थे, एक दादाजान (ह़ाजी अ़ब्दुन्नबी क़ादिरी रज़वी رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ) के उस्तादे मोह़तरम मौलाना शाह अ़ब्दुर्रह़मान क़ादिरी जयपूरी (आ'ला ह़ज़रत के शागिर्द और ख़लीफ़ा) और दूसरे ख़ुद दादाजान मोह़तरम ह़ाजी अ़ब्दुन्नबी क़ादिरी رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ समेत कुछ और ह़ज़रात थे।

देहली से अजमेर शरीफ़ तक जाने के लिये "बी बी एन्ड सी आई आर" रेल चला करती थी, जब येह रेलगाड़ी "फुलेरा स्टेशन" पर पहुंची तो क़रीब क़रीब मग़रिब का वक़्त हो जाता था "फुलेरा" उस दौर का बहुत बड़ा रेल्वे स्टेशन हुवा करता था, जहां सांभर, जोधपूर और बीकानेर से आने वाली गाड़ियों का भी क्रोस हुवा करता था। इन तमाम दूसरी लाइनों

से आने वाले मुसाफ़िर अजमेर शरीफ़ जाने के लिये इसी मेलगाड़ी (ट्रेन) को पकड़ते थे, इस लिये येह मेलगाड़ी फुलेरा स्टेशन पर तक़रीबन चालीस मिनट ठहरा करती थी, मैं ने खुद अजमेर शरीफ़ ह़ाज़िरी देने के लिये इसी गाड़ी से कई बार सफ़र किया और फुलेरा स्टेशन का ह़ाल देखा है।

ट्रेन जब रुकी

बहर कैफ़ ! जब आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه सफ़र कर रहे थे तो फुलेरा स्टेशन पर पहुंचते ही मग़रिब की नमाज़ का वक़्त हो गया, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने अपने मुरीदीन से फ़रमाया : नमाज़े मग़रिब के लिये जमाअ़त प्लेट फ़ोर्म पर ही कर ली जाए, चुनान्चे चादरें बिछा दी गईं और लोगों में से जिन का वुज़ू न था उन्हों ने वुज़ू कर लिया, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه अक्सर बा वुज़ू रहते थे, आप ने फ़रमाया : मेरा वुज़ू है और इमामत के लिये आगे बढ़े फिर फ़रमाया कि आप सब लोग पूरे इत़्मीनान के साथ नमाज़ अदा करें, اِنْ شَآءَاللّٰه गाड़ी हरगिज़ उस वक़्त तक न जाएगी जब तक हम लोग नमाज़ पूरे त़ौर से अदा नहीं कर लेते।

ट्रेन चल न सकी

येह फ़रमा कर आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने इमामत करते हुए नमाज़ पढ़ना शुरूअ़ कर दी। मग़रिब के फ़र्ज़ की जब एक रक्अ़त ख़त्म कर चुके तो एक दम गाड़ी ने व्हिसल (Whistle) दे दी, प्लेट फ़ोर्म पर दीगर बिखरे हुए मुसाफ़िर तेज़ी के साथ अपनी अपनी सीटों पर गाड़ी में सुवार हो गए। मगर आप के पीछे नमाज़ियों की येह जमाअ़त पूरे इस्तिग़राक़ (या'नी खुशूओ खुज़ूअ़) के साथ नमाज़ में बराबर मश्ग़ूल रही, दूसरी रक्अ़त मग़रिब के फ़र्ज़ की हो रही थी कि गाड़ी ने अब आख़िरी व्हिसल भी दे

दी, मगर हुवा क्या कि रेल का इन्जन आगे को न सरक्ता था। मेल (Mail) गाड़ी थी, कोई मा'मूली पेसेन्जर गाड़ी न थी, इस लिये ड्राइवर और गार्ड सब परेशान हो गए कि आख़िर येह हुवा क्या कि गाड़ी आगे नहीं जाती ! किसी की समझ में नहीं आया, इन्जन को टेस्ट करने के लिये ड्राइवर ने गाड़ी को पीछे की त़रफ़ धकेला तो गाड़ी पीछे की सम्त चलने लगी, मगर जब इन्जन को आगे की त़रफ़ धकेलता तो इन्जन रुक जाता।

इतने में स्टेशन मास्टर जो अंग्रेज़ था, अपने कमरे से निकल कर प्लेट फ़ोर्म पर आया और उस ने ड्राइवर से कहा कि इन्जन को गाड़ी से काट कर (या'नी जुदा कर के) देखो, चलता है या नहीं, उस ने ऐसा ही किया तो अच्छी त़रह़ पूरी रफ़्तार से चला मगर जब रेल के डिब्बों के साथ जोड़ कर उसी इन्जन को चलाया तो वोह फिर जाम हो गया और एक इन्च भी आगे को न चला, रेल का ड्राइवर और सब लोग बड़े ह़ैरानो परेशान कि आख़िर येह माजरा (या'नी वाक़िआ़) क्या है कि इन्जन रेल के साथ जुड़ कर आगे को नहीं जाता।

वलिय्ये कामिल की बरकत

स्टेशन मास्टर ने गार्ड से, जो नमाज़ियों के क़रीब ही खड़ा था पूछा कि येह क्या बात है कि इन्जन अलग करो तो चलने लगता है और डिब्बों के साथ जोड़ो तो बिल्कुल पटरी पर जाम हो कर रह जाता है ! वोह गार्ड मुसल्मान था, उस के ज़ेहन में बात आ गई, उस ने स्टेशन मास्टर को बताया कि समझ में येह आता है कि येह बुज़ुर्ग जो नमाज़ पढ़ा रहे हैं, बहुत बड़े वलिय्युल्लाह हैं, यक़ीनन इस के इलावा और कोई वज्ह नहीं।

अब जब तक येह बुज़ुर्ग और इन की जमाअ़त नमाज़ अदा नहीं कर लेते, येह गाड़ी मुश्किल है कि चले, येह **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से

इन वलिय्युल्लाह की करामत मा'लूम होती है, बस अब इन के नमाज़ अदा करने तक तो इन्तिज़ार ही करना पड़ेगा। स्टेशन मास्टर को येह बात समझ में आ गई और वोह कहने लगा कि बिला शुबा येही बात मा'लूम होती है, चुनान्चे वोह नमाज़ियों की जमाअ़त के क़रीब आ कर खड़ा हो गया और नमाज़ में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْه और उन के मुरीदीन के इस्तिग़राक़ और ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ का येह रूह़ परवर मन्ज़र देख कर बेह़द मुतअस्सिर हुवा, अंग्रेज़ी उस की मादरी ज़बान थी, मगर वोह उर्दू और फ़ारसी का भी माहिर था और बे तकल्लुफ़ उर्दू में कलाम करता था, गार्ड के साथ उस की येह सारी गुफ़्तगू उर्दू ही में थी।

सच्चा मुसल्मान नमाज़ क़ज़ा नहीं कर सकता

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْه ने सलाम फेरा और ब आवाज़े बुलन्द दुरूद शरीफ़ पढ़ कर दुआ़ मांगने में मसरूफ़ हो गए, जब दुआ़ से फ़ारिग़ हुए तो आगे बढ़ कर निहायत अदब के साथ स्टेशन मास्टर (अंग्रेज़) ने उर्दू ही में अ़र्ज़ की : ह़ज़रत ! ज़रा जल्दी फ़रमाएं ! येह गाड़ी आप ही की मसरूफ़िय्यते इ़बादत के सबब चल नहीं रही।

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْه ने फ़रमाया : येह नमाज़ का वक़्त है, कोई भी सच्चा मुसल्मान नमाज़ क़ज़ा नहीं कर सकता, नमाज़ हर मुसल्मान पर फ़र्ज़ है, फ़र्ज़ को कैसे छोड़ा जाए ? स्टेशन मास्टर पर इस्लाम की रूह़ानी हैबत त़ारी हो गई, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْه और उन के मुरीदीन ने सुकून के साथ जब नमाज़ पूरे त़ौर पर अदा कर ली और दुआ़ मांग कर फ़ारिग़ हुए तो आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْه ने पास ही खड़े हुए अंग्रेज़ स्टेशन मास्टर से फ़रमाया : اِنْ شَآءَاللّٰہ अब गाड़ी चलेगी, हम सब लोग नमाज़ से फ़ारिग़

हो गए हैं। येह फ़रमाया और अपने सब हमराहियों के साथ गाड़ी में बैठ गए, गाड़ी ने सीटी दी और चलने लगी, स्टेशन मास्टर ने अपने अन्दाज़ में सलाम किया और आदाब बजा लाया मगर इस करामत का उस के ज़ेह्न और दिल पर बड़ा गहरा असर पड़ा।

अंग्रेज़ के दिल में हलचल

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه तो अजमेर शरीफ़ रवाना हो गए मगर स्टेशन मास्टर सोच में पड़ गया, रात भर वोह इसी ग़ौरो फ़िक्र में रहा, उस को नींद न आई, सुब्ह़ हुई तो चार्ज अपने डिप्टी के ह़वाले कर के अपने ख़ानदान के अफ़राद के साथ ह़ाज़िरी के लिये अजमेर शरीफ़ की जानिब चल पड़ा, ताकि वहां दरगाहे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه पर ह़ाज़िर हो कर आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के दस्ते मुबारक (या'नी हाथ मुबारक) पर इस्लाम क़बूल करे।

अंग्रेज़ मुसल्मान हो गया

जब अजमेर शरीफ़ पहुंचा तो देखा कि दरबार शरीफ़ की शाह जहानी मस्जिद में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का ईमान अफ़रोज़ वा'ज़ (या'नी बयान) हो रहा है, वोह वा'ज़ में शरीक हुवा और जब वा'ज़ ख़त्म हुवा तो क़रीब पहुंच कर आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के हाथ चूम लिये और अ़र्ज़ की : जब से आप फुलेरा स्टेशन से इधर रवाना हुए हैं मैं इस क़दर बेचैन हूं कि मुझे सुकून नहीं आता। आख़िर अपने ख़ानदान के अफ़राद के हमराह यहां ह़ाज़िर हो गया हूं और अब आप के दस्ते मुबारक (या'नी हाथ मुबारक) पर इस्लाम क़बूल करना चाहता हूं, आप की येह करामत देख कर मुझे इस्लाम की सदाक़त (या'नी सच्चाई) का यक़ीने कामिल हो गया है और मुझे पता चल गया है कि बस इस्लाम ही **अल्लाह** पाक का सच्चा दीन है।

ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه से मह़ब्बते आ'ला ह़ज़रत

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه ने हज़ारहा ज़ाइरीने दरबारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के सामने उस अंग्रेज़ जिस का नाम रोबर्ट (Robert) था और उस के ख़ानदान के 9 अफ़राद को कलिमा पढ़ा कर मुसल्मान किया और उस का इस्लामी नाम ग़ौसे पाक के नाम पर "अ़ब्दुल क़ादिर" रखा। आप ने उस को मुसल्मान करने के बा'द सिल्सिलए क़ादिरिय्या में अपना मुरीद भी किया और येह हिदायत फ़रमाई कि

आ'ला ह़ज़रत की नसीह़त

"हमेशा इत्तिबाए़ सुन्नत का ख़याल रखना (या'नी सुन्नतों पर अ़मल करना), नमाज़ किसी वक़्त न छोड़ना, नमाज़, रोज़े की पाबन्दी बहुत ज़रूरी है और जब मौक़अ़ मिले तो ह़ज पे भी ज़रूर जाना और ज़कात अदा करना और हमेशा ख़िदमते दीन का ख़याल रखना, अब अपने वत़न भी जब जाओ तो वहां भी दीन को फैलाने की ख़िदमत अन्जाम देना, येह बहुत बड़ी सआ़दत है। अब ख़ुद भी क़ुरआने पाक की ता'लीम ह़ासिल करो और अपने तमाम ख़ानदान के अफ़राद को क़ुरआने पाक की ता'लीम दिलवाओ।" फिर वोह नौ मुस्लिम अंग्रेज़ क़ुरआने करीम ख़त्म करने के बा'द हिन्दूस्तान से वत़न वापस लौट गया और वहां जा कर इस्लाम की ख़िदमत के लिये वक़्फ़ हो गया।

(इमाम अह़मद रज़ा अ़ज़ीम मोह़सिन अ़ज़ीम किरदार, स. 14 ता 17 मुलख़्ख़सन, सालनामा मआ़रिफ़े रज़ा, स. 157 ता 161 मुलख़्ख़सन, मत़्बूआ़ 1983)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। أٰمِين بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

या मुईनद्दीन अजमेरी ! करम की भीक दो अज़ पए ग़ौसो रज़ा ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

(वसाइले बख़्शिश, स. 536)

जुमुए में बयान

(एक बार) आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के अजमेर शरीफ़ क़ियाम के दौरान जुमुआ का दिन आ गया, ए'लान हुवा कि मुजद्दिदे दीनो मिल्लत आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मज़ारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के साथ वाक़ेअ़ मस्जिद शाह जहानी में जुमुआ से क़ब्ल ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की शाने विलायत पर बयान फ़रमाएंगे, उस जुमुआ को कई घन्टे पहले ही नमाज़ियों की आमद का सिलसिला शुरूअ़ हो गया, यहां तक कि मस्जिद और आस पास की जगह भर गई, मेरे आक़ा आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का बयान शुरूअ़ हुवा, बयान शरीफ़ ऐसा ईमान अफ़्रोज़ था कि हाज़िरीन झूम उठे, फिर ए'लान हुवा कि बाक़ी बयान बा'द नमाज़े इशा इसी मस्जिद में होगा, लोग ख़ुश हो गए, फिर आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने बा'दे इशा बयान शुरूअ़ फ़रमाया और रात काफ़ी देर तक बयान हुवा। (सफ़र नामा आ'ला हज़रत, स. 190 मुल्तक़तन व मुलख़्ख़सन, सनाए हज़रते ख़्वाजा ब ज़बाने इमाम अह्मद रज़ा, 2013 ई., स. 7 मुल्तक़तन व मुलख़्ख़सन)

अल्लाह अल्लाह तबह्हुरे इल्मी अब भी बाक़ी है ख़िदमते क़लमी
अहले सुन्नत का है जो सरमाया वाह क्या बात आ'ला हज़रत की

(वसाइले बख़्शिश, स. 575)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ علٰى مُحَمَّد

ख़्वाजा साहिब का इख़्तियार

आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : भागलपूर (हिन्द के एक शहर) से एक साहिब हर साल अजमेर शरीफ़ जाते थे। एक ऐसा मालदार शख़्स

जो औलियाए किराम رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہِم की विलायत व इख़्तियारात को नहीं मानता था। उस ने उन साहिब से कहा : मियां हर साल कहां जाया करते हो ? बेकार इतना रुपिया सर्फ़ (या'नी ज़ाएअ़) करते हो। उन्हों ने कहा : चलो ! और इन्साफ़ की आंख से देखो ! फिर तुम को इख़्तियार है। ख़ैर ! एक साल वोह शख़्स साथ आया, देखा कि एक फ़क़ीर सोंटा (डन्डा) लिये रौज़े शरीफ़ पर येह सदा (या'नी आवाज़) लगा रहा है : "ख़्वाजा पांच रुपै लूंगा और एक घन्टे के अन्दर लूंगा और एक ही शख़्स से लूंगा।" जब उस बद अ़क़ीदा शख़्स को ख़याल हुवा कि अब बहुत वक़्त गुज़र गया, एक घन्टा हो गया होगा और अब तक इसे किसी ने कुछ न दिया, जेब से पांच रुपै निकाल कर उस के हाथ पर रखे और कहा : लो मियां ! तुम ख़्वाजा से मांग रहे थे। भला ख़्वाजा क्या देंगे ? लो ! हम देते हैं। फ़क़ीर ने वोह रुपै जेब में रखे और एक चक्कर लगा कर ज़ोर से कहा : "ख़्वाजा ! तोरे बल्हारी जाऊं (या'नी आप के क़ुरबान जाऊं) दिलवाए भी तो किस बद अ़क़ीदा शख़्स से।" (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 384 मुलख़्ख़सन व ब तग़य्युर)

मैं हूं साइल मैं हूं मंगता — या ख़्वाजा मेरी झोली भर दो
हाथ बढ़ा कर डाल दो टुकड़ा — या ख़्वाजा मेरी झोली भर दो
जो भी साइल आ जाता है — मन की मुरादें पा जाता है
मैं ने भी दामन है पसारा — या ख़्वाजा मेरी झोली भर दो

(वसाइले बख़्शिश, स. 568)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ह़ज़रत मुईनुद्दीन ज़रूर ग़रीब नवाज़ हैं

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ से सुवाल हुवा : ह़ज़रते ख़्वाजा

मुईनुद्दीन सिज्ज़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को ग़रीब नवाज़ के लक़ब से पुकारना जाइज़ है या नहीं ? तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : ह़ज़रते सुल्त़ानुल हिन्द मुईनुल ह़क़्क़े वद्दीन ज़रूर ग़रीब नवाज़ (हैं)। (फ़तावा रज़विय्या, 29/105 माख़ूज़न)

ख़्वाब में ह़ाज़िरी

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बेदारी के साथ साथ ख़्वाब में भी अजमेर शरीफ़ ह़ाज़िर हुए हैं, चुनान्चे आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं :

माहे मुबारक रबीउ़ल आख़िर 1302 हि. में मैं सुल्त़ानुल मशाइख़ मह़बूबे इलाही رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के मज़ार शरीफ़ पर ह़ाज़िर हुवा, इस से दो साल पहले मेरी सीधी आंख में कस्रते मुत़ालआ़ (STUDY) की वज्ह से कुछ ज़ो'फ़ आ गया (या'नी कमज़ोरी हो गई), मैं ने चालीस दिन तक डॉक्टरों से इलाज करवाया मगर कुछ फ़ाएदा न हुवा, फिर सुल्त़ानुल मशाइख़ मह़बूबे इलाही رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ता'रीफ़ में चन्द अश्आ़र लिखे, रात जब सोया तो ख़्वाब में एक ख़ूब सूरत मक़ाम देखा, जिस के एक त़रफ़ मस्जिद और दूसरी जानिब मज़ार शरीफ़ था, जब क़रीब गया तो तीन क़ब्रें नज़र आईं, क़िब्ले की त़रफ़ ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की जब कि उस के पीछे ह़ज़रते शाह बरकतुल्लाह मारहरवी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की क़ब्र शरीफ़ थी, तीसरी क़ब्र मैं पहचान न सका। मैं ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के क़दमों की त़रफ़ बैठ गया, क्या देखता हूं कि क़ब्र मुबारक खुली और ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه क़िब्ले की त़रफ़ चेहरा कर के लैटे हुए हैं और मुबारक आंखें खुली हुई हैं, हुल्या मुबारक कुछ यूं कि त़ाक़त वर और दराज़ क़द, रंग सुर्ख़, आंखें कुशादा और दाढ़ी के बाल सियाह हैं, मैं बेख़ुद (या'नी अपने आप से बे ख़बर) हो कर दौड़ा और क़ब्र शरीफ़ खुलने में जो मिट्टी

शरीफ़ बाहर तशरीफ़ लाई थी उस को चेहरे और आंख पर लगाया और सूरतुल कह्फ़ की तिलावत शुरूअ़ कर दी, किसी ने मन्अ़ किया तो मैं ने दिल में कहा कि मैं ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के सामने तिलावत कर रहा हूं, येह मुझे क्यूं मन्अ़ कर रहा है ? इतने में ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه मुस्कुराने लगे, गोया कि मुझे इशारा फ़रमा रहे हैं : उन्हें छोड़ दो और तुम पढ़ो ! फिर मुझे याद नहीं कि आयत नम्बर 10 या 16 तक पहुंचा और मेरी आंख खुल गई, **अल्लाह** पाक का करम हो गया कि इधर ख़्वाब देखा उधर आंख के मरज़ में काफ़ी फ़र्क़ पड़ गया, मैं ने कहा : येह उस मुबारक मिट्टी मलने की बरकत है और ह़ज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की येह करम नवाज़ी सुल्त़ानुल मशाइख़ मह़बूबे इलाही رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की मन्क़बत की बदौलत ह़ासिल हुई । (क़सीदए इक्सीरे आ'ज़म मअ़ तरजमा, स. 110 ता 114 मुलख़्ख़सन)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمِين بِجاهِ خاتَمِ النَّبِيّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

तुझ को बग़दाद से ह़ासिल हुई वोह शाने रफ़ीअ़ दंग रह जाते हैं सब देख के रुत्बा तेरा

(ज़ौक़े ना'त, स. 28)

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सय्यिद ह़ुसैन अ़ली अजमेरी

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत सय्यिद ह़ुसैन अ़ली अजमेरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का सिल्सिलए नसब ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से होता हुवा मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِىَ اللهُ عَنْه से जा मिलता है । आप को ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से बेह़द मह़ब्बत थी और मज़ारे मुबारक की ख़िदमत को अपने लिये सआ़दत समझते थे, बत़ौरे आ़जिज़ी फ़रमाते हैं : "हम बुरे हैं भी तो ग़रीब नवाज़ ख़्वाजा के हैं ।" आप ने ख़्वाजा

ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की सीरते मुबारका पर एक किताब बनाम **"दरबारे चिश्त अजमेर"** लिखी, जिस में बारगाहे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه में ह़ाज़िरी के आदाब लिखे हैं। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه आप की बड़ी इ़ज़्ज़तो ता'ज़ीम फ़रमाते थे।

(तजल्लियाते ख़ुलफ़ाए आ'ला ह़ज़रत, स. 448 ता 456 मुल्तक़तन व ब तग़य्युर)

आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह से शहज़ादे की बारगाह में

दरबारे ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه में आ'ला ह़ज़रत की ह़ाज़िरी का ख़ूब सूरत वाक़िआ़ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत सय्यिद हुसैन अ़ली अजमेरी बड़े प्यारे अन्दाज़ से अपनी किताब **"दरबारे चिश्त"** में लिखते हैं :

मेरे पीरो मुर्शिद, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, आ'ला ह़ज़रत, मौलाना इमाम अह़मद रज़ा ख़ां साह़िब رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه भी दो बार दरबारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ में ह़ाज़िर हुए हैं। दूसरी ह़ाज़िरी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र है। आप 1325 हि. में ह़ज्जो ज़ियारत की सआ़दत ह़ासिल कर के जब साह़िले हिन्दूस्तान पर उतरे तो मुख़्तलिफ़ शहरों से आप के चाहने वाले बम्बई पहुंच गए और कई जगह से पैग़ामात आए कि आप हमारे हां करम फ़रमाएं ! मगर आप सीधे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ (رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه) के आस्ताने पर ह़ाज़िर हुए। ख़्वाजए आ़लम हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबार (मदीनए पाक) की ह़ाज़िरी के बा'द आप ने इन के शहज़ादे ह़ज़रत ख़्वाजए हिन्द के दरबार में ह़ाज़िरी दी। येह ह़ाज़िरी ऐसी अ़क़ीदतो महब्बत वाली थी कि हम ख़ुद्दामे आस्ताना और तमाम मुसल्मानाने अजमेर के दिलों पर नक़्श हो गई। आज तक हम ख़ुद्दाम में उस ह़ाज़िरी के चरचे होते हैं।

(दरबारे चिश्त, स. 33 ब तग़य्युर व तस्हील)

मज़ारे ख़्वाजा पर आ'ला ह़ज़रत का सिवुम

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अपने ख़लीफ़ा, ह़ज़रत सय्यिद हुसैन अ़ली अजमेरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को बारगाहे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه में ह़ाज़िरी के वक़्त अपना वकीले दुआ़ गो (या'नी दुआ़ करने वाला) बनाते और दो बार आप के घर (अजमेर शरीफ़) में क़ियाम भी फ़रमाया। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के इन्तिक़ाल पर आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने ही सिवुम का इन्तिज़ाम आस्तानए आ़लिया ख़्वाजए ख़्वाजगां ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه पर बड़े पैमाने पर बा'दे फ़ज्र किया, जिस में बहुत ख़त्मे क़ुरआन हुए और आख़िर में लंगर भी तक़्सीम हुवा। उ़र्से आ'ला ह़ज़रत के मौक़अ़ पर ह़ज़रत सय्यिद हुसैन अ़ली अजमेरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अजमेर शरीफ़ से क़ाफ़िले की सूरत में (बरेली शरीफ़ मज़ारे मुबारक पर चढ़ाने के लिये) चादर लाते।

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने आप को सिल्सिलए चिश्तिय्या में अपनी ख़िलाफ़त से भी नवाज़ा। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का मज़ार शरीफ़ अजमेर शरीफ़ में "अना सागर घाट" पर है।

(तजल्लियाते ख़ुलफ़ाए आ'ला ह़ज़रत, स. 456, 462 मुल्तक़तन व ब तग़य्युर)

दरबारे ख़्वाजा के ख़ुद्दाम ग़मज़दा

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का जब इन्तिक़ाल हुवा तो मुल्क के मुख़्तलिफ़ शहरों की त़रह़ अजमेर शरीफ़ में भी एहतिमाम के साथ आप की फ़ातिह़ा या'नी सिवुम की तक़रीबात हुईं, आप के विसाल से दरबारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के ख़ुद्दाम व मुरीदीन को बे पनाह रन्जो मलाल हुवा। (तजल्लियाते ख़ुलफ़ाए आ'ला ह़ज़रत, स. 458, 459 मुलख़्ख़सन)

अल्लाहु ग़नी ! शाने वली ! राज दिलों पर दुन्या से चले जाएं हुकूमत नहीं जाती

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ علٰى مُحَمَّد

मज़ारे ख़्वाजा पर दुआ क़बूल होती है

वालिदे आ'ला ह़ज़रत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अपनी किताब "अह़्सनुल विआ़अ लि आदाबिद्दुआ़अ" जिस को मक्तबतुल मदीना ने "फ़ज़ाइले दुआ़" के नाम से प्रिन्ट किया है, इस किताब की शर्ह़ ख़ुद सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने की है और कई मक़ामात पर इज़ाफ़े भी फ़रमाए हैं, चुनान्चे इस किताब के सफ़ह़ा नम्बर 128 पर "बाब अम्किनए इजाबत (या'नी दुआ़ क़बूल होने के मक़ामात)" में से मक़ाम नम्बर 39 पर आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने तह़रीर फ़रमाया कि मर्क़दे मुबारक ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुईनुल ह़क़्क़े वद्दीन चिश्ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه (या'नी ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के मज़ार पर दुआ़ क़बूल होती है।) (फ़ज़ाइले दुआ़, स. 138 माख़ूज़न)

अजमेर शरीफ़

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से अजमेर शरीफ़ के बारे में एक सुवाल हुवा, जिस के जवाब में आप ने बहुत ख़ूब सूरत बात इर्शाद फ़रमाई :

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "अजमेर शरीफ़" के नामे पाक के साथ (जान बूझ कर आ़दतन) लफ़्ज़ "शरीफ़" न लिखना अगर इस वज्ह से है कि ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के इस शहरे मुबारक में आने, ज़िन्दगी मुबारक गुज़ारने और मज़ार शरीफ़ को अ़ज़्मतो बरकत की जगह नहीं मानता तो गुमराह (या'नी राहे ह़क़ से भटका हुवा) बल्कि अ़दुव्वुल्लाह (या'नी **अल्लाह** पाक का दुश्मन) है।

बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीसे पाक में है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक फ़रमाता है : जिस ने मेरे किसी दोस्त से दुश्मनी की

उस के ख़िलाफ़ मेरा ए'लाने जंग है। (بخاری،4/248،حدیث:6502) और ख़्वाजए ख़्वाजगान رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ का गुलाम बनने से इन्कार करने की वज्ह अगर तकब्बुर करना है तो वोही गुमराह (या'नी राहे ह़क़ से भटका हुवा है) और पिछली ह़दीस के हुक्म के मुत़ाबिक़ अ़दुव्वुल्लाह (या'नी **अल्लाह** पाक का दुश्मन) है और उस का ठिकाना जहन्नम, **अल्लाह** पाक क़ुरआने करीम में इर्शाद फ़रमाता है :

اَلَیْسَ فِیْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِیْنَ ﴿۶۰﴾

(پ24،الزمر:60)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या मग़रूर का ठिकाना जहन्नम में नहीं।

(फ़तावा रज़विय्या, 15/265 मुलख़्ख़सन)

अपनी मन्ज़िल से कभी भी वोह भटक सकता नहीं जिस के तुम हो रहनुमा ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया
एक ज़र्रा हो अ़ता अ़त्तार के हो जाएगा ख़्वाजा ! घर भर का भला ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

(वसाइले बख़्शिश, स. 538, 539)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

अ़रबी शजरा ब शक्ले सनद में अल्क़ाबाते ग़रीब नवाज़

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने सिल्सिलए क़ादिरिय्या चिश्तिय्या निज़ामिया बरकातिया का शजरा सनदे ह़दीस की सूरत में तह़रीर फ़रमाया और उस में ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ को 5 अल्क़ाबात से याद फ़रमाया : ﴿1﴾ अस्सय्यिदुल अजल या'नी वक़्त के बहुत बड़े इमाम ﴿2﴾ सुल्त़ानुल हिन्द (हिन्दूस्तान के बादशाह) ﴿3﴾ ह़बीबुल्लाह (या'नी **अल्लाह** पाक के प्यारे बन्दे) ﴿4﴾ वारिसुन्नबी (या'नी नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वारिस) ﴿5﴾ मुईनुद्दीन (या'नी दीन की मदद फ़रमाने वाले) अल जिश्ती, अस्सिजज़ी, अल अजमेरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ।

(तारीख़ व शर्हे शजरए क़ादिरिय्या बरकातिया रज़विय्या, स. 119)

ख़्वाजए ख़्वाजगां ! ग़रीब नवाज़, ग़रीब नवाज़
क़िब्लए आ़रिफ़ां ! ग़रीब नवाज़, ग़रीब नवाज़
सय्यिदे ज़ाहिदां ! ग़रीब नवाज़, ग़रीब नवाज़
ज़ीनते आ़रिफ़ां ! ग़रीब नवाज़, ग़रीब नवाज़
मुर्शिदे नाक़िसां ! ग़रीब नवाज़, ग़रीब नवाज़
रहबरे कामिलां ! ग़रीब नवाज़, ग़रीब नवाज़
हादिये गुम्रहां ! ग़रीब नवाज़, ग़रीब नवाज़
मुस्लिहे आ़सियां ! ग़रीब नवाज़, ग़रीब नवाज़
ह़ामिये बे कसां ! ग़रीब नवाज़, ग़रीब नवाज़
हैं कसे बे कसां ! ग़रीब नवाज़, ग़रीब नवाज़
ऐ शहे सालिह़ां ! ग़रीब नवाज़, ग़रीब नवाज़
हम पे हों मेह्रबां ! ग़रीब नवाज़, ग़रीब नवाज़

(वसाइले फ़िरदौस, स. 62)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

सदरुश्शरीअ़ह अजमेर शरीफ़ में सदरुल मुदर्रिस

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه दरबारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه में ह़ाज़िर हो कर 1925 ई. से 1933 ई. तक कमो बेश 8 साल दारुल उ़लूम मुईनिया उ़स्मानिया में सदरुल मुदर्रिसीन (या'नी सब से बड़े उस्ताज़) की हैसिय्यत से इ़ल्मे दीन की तदरीस (Teaching) फ़रमाते रहे ।

(सीरते सदरुश्शरीअ़ह, स. 48)

ख़्वाजा साह़िब से ख़ानदाने रज़ा की मह़ब्बत

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के इन्तिक़ाल शरीफ़ के बा'द आप के शहज़ादगान हु़ज्जतुल इस्लाम मौलाना शाह ह़ामिद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه और हु़ज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه हर साल ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के कुल (उ़र्स) के मौक़अ़ पर बा क़ाइ़दगी से ह़ाज़िर होते थे, आप मुल्क के किसी हिस्से में हों मगर 6 रजब को आप की ह़ाज़िरी अजमेर शरीफ़ में ज़रूर बिज़्ज़रूर होती थी ।

(ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ और एक ग़लत़ फ़हमी का इज़ाला, स. 7 माख़ूज़न)

ग़रीब नवाज़ का बाग़

ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत सदरुल अफ़ाज़िल हज़रत मौलाना नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की सीरत पर बा क़ाइदा एक किताब बनाम "गुलबुने ग़रीब नवाज़" लिखी है।

(तज़्किरए सदरुल अफ़ाज़िल, स. 20)

बारगाहे ग़रीब नवाज़ में एक और ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत

आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के एक और ख़लीफ़ा शैख़ुल अस्फ़िया सय्यिद ग़ुलाम अ़ली अजमेरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपनी सारी ज़िन्दगी सुल्तानुल हिन्द ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ता'लीमात को आ़म करने में गुज़ारी, यहां तक कि आप का मज़ार शरीफ़ भी ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के मज़ार शरीफ़ से मुत्तसिल (या'नी साथ वाले) क़ब्रिस्तान में है, आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه इस वज्ह से आप से बहुत महब्बत फ़रमाया करते कि आप ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के मज़ार शरीफ़ के ख़ादिम थे।

(तजल्लियाते ख़ुलफ़ाए आ'ला हज़रत, स. 471)

ख़िलाफ़ते आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه

आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपनी मुबारक ज़िन्दगी के आख़िरी दिनों में 13 जुमादल आख़िरा 1338 हिजरी बरोज़ जुमुअ़तुल मुबारक सय्यिद ग़ुलाम अ़ली अजमेरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को अपनी ख़िलाफ़त से नवाज़ा।[1]

(तजल्लियाते ख़ुलफ़ाए आ'ला हज़रत, स. 472)

---

1 ... इजाज़त व ख़िलाफ़त की तहरीर का अ़क्स किताब के आख़िर में देखिये।

सिल्सिलए चिश्तिय्या निज़ामिया बरकातिया

प्रोफ़ेसर मजीदुल्लाह क़ादिरी साह़िब लिखते हैं : तल्मीज़, मुरीद व ख़लीफ़ए मजाज़ मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल हादी क़ादिरी रज़वी नूरी دامَ ظِلُّہ से इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ के लिखे हुए शजरों पर गुफ़्त्गू हो रही थी, इस पर उन्हों ने बताया कि आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ को मारह्रा शरीफ़ से जिन 13 सलासिल में ख़िलाफ़तो इजाज़त थी उस में एक सिल्सिला "चिश्तिय्या निज़ामिया बरकातिया" भी है और आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने इस सिल्सिले में कुछ लोगों को बैअ़त भी किया था और उन की ख़्वाहिश पर उर्दू मन्ज़ूम शजरा सिल्सिलए चिश्तिय्या निज़ामिया बरकातिया भी तस्नीफ़ फ़रमाया था । बारगाहे इलाही में ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ के वसीले से इस शजरे में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ इस त़रह़ लिखते हैं :

मुर्शिदाने चिश्त की सच्ची ग़ुलामी कर नसीब   शह मुईनुद्दीन चिश्ती बा ख़ुदा के वासित़े

(तारीख़ व शर्हे शजरए क़ादिरिय्या बरकातिया रज़विय्या, स. 98)

मन्क़बते ह़ज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ के भाईजान मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान ह़सन رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने सुल्त़ानुल हिन्द, ह़ज़रते ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की मन्क़बत में 19 अश्आ़र लिखे हैं, **अल्लाह** पाक ने आप की इस मन्क़बत को क़बूले आ़म से नवाज़ा है, अ़वामो ख़वास में येह मन्क़बत काफ़ी ज़ौक़ो शौक़ से पढ़ी सुनी जाती है ।

ख़्वाजए हिन्द वोह दरबार है आ'ला तेरा
कभी महरूम नहीं मांगने वाला तेरा

मए सर जोश दर आग़ोश है शीशा तेरा
बेखुदी छाए न क्यूं पी के पियाला तेरा

ख़ुफ़्तगाने शबे ग़फ़्लत को जगा देता है
सालहा साल वोह रातों का न सोना तेरा

है तेरी ज़ात अ़जब बहूरे ह़क़ीक़त प्यारे
किसी तैराक ने पाया न किनारा तेरा

जोरे पामालिये आ़लम से इसे क्या मत़लब
ख़ाक में मिल नहीं सकता कभी ज़र्रा तेरा

किस क़दर जोशे तह़य्युर के अ़यां हैं आसार
नज़र आया मगर आईना को तल्वा तेरा

गुलशने हिन्द है शादाब कलेजे ठन्डे
वाह ऐ अब्रे करम ज़ोरे बरसना तेरा

क्या महक है कि मुअ़त्तर है दिमाग़े आ़लम
तख़्तए गुलशने फ़िरदौस है रौज़ा तेरा

तेरे ज़र्रे पे मआ़सी की घटा छाई है
इस त़रफ़ भी कभी ऐ मेहर हो जल्वा तेरा

तुझ में हैं तरबियते ख़िज़्र के पैदा आसार
बहूरो बर में हमें मिलता है सहारा तेरा

फिर मुझे अपना दरे पाक दिखा दे प्यारे
आंखें पुरनूर हों फिर देख के जल्वा तेरा

ज़िल्ले ह़क़ ग़ौस पे है ग़ौस का साया तुझ पर
साया गुस्तर सरे ख़ुद्दाम पे साया तेरा

तुझ को बग़दाद से ह़ासिल हुई वोह शाने रफ़ीअ़
दंग रह जाते हैं सब देख के रुत्बा तेरा

क्यूं न बग़दाद में जारी हो तेरा चश्मए फ़ैज़
बहूरे बग़दाद ही की नहर है दरिया तेरा

कुरसी डाली तेरी तख़्ते शहे जीलां के हुज़ूर
कितना ऊंचा किया **अल्लाह** ने पाया तेरा

रश्क होता है ग़ुलामों को कहीं आक़ा से
क्यूं कहूं रश्क दहे बद्र है तल्वा तेरा

बशर अफ़्ज़ल हैं मलक से तेरी यूं मद्ह़ करूं
न मलक ख़ास बशर करते हैं मुजरा तेरा

जब से तू ने क़दमे ग़ौस लिया है सर पर
औलिया सर पे क़दम लेते हैं शाहा तेरा

मुह़्ये दीं ग़ौस हैं और ख़्वाजा मुईनुद्दीं है
ऐ ह़सन क्यूं न हो मह़फ़ूज़ अ़क़ीदा तेरा

(ज़ौक़े ना'त, स. 27, 29)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

بسم الله الرحمن الرحيم

اعلیٰ حضرت کی ستّر سالہ قدیم تحریر اجمیر پاک میں

[illegible]

اللهم اليك اسناد الحمد ونهاية سلاسل الشكر صل على حبلك الموصول المتصل الغير المنقطع مرسلك المرفوع بوصلك فوق كل ارتفاع وعلى آله وصحبه خير آل وصحب رواة علمه وحديثه طرقه الواصلين الى ساحته الرحب. **وبعد** فقد اجزت اخي في الله المولوي السيد غلام علي الاجميري ابن المولوي السيد نور محمد بالسلسلة العلية العالية القادرية البركاتية والچشتية النظامية المباركة **واوصيته** بالجد في طلب العلم ثم بجوده عمره في حماية السنن واعانة اربابها ونكاية البدع واهانة اصحابها لا سيما الوهابية فانهم اضر اعدائه والقاديانية فانها اخبث الطوائف الشيطانية اعاذنا الله واياه والمسلمين من شرهم وشرورهما وشرور اولي الشر اجمعين آمين وان لا ينساني في دعائه الصالح ولا على مثلي ان شاء الله العزيز الفاتح وكان هذا [illegible] يوم الجمعة المبارك [illegible] من شهر [illegible] الانبياء صلى الله عليه وعليهم افضل الصلاة والثناء [illegible]

اما السلسلة العلية العالية القادرية [illegible] فقد عرفتنا [illegible] اما الچشتية النظامية فاجازني بها سيدي ومولاي ومرشدي وذخري ليومي وغدي سيدنا السيد شاه آل الرسول الاحمدي رضي الله تعالى عنه وارضى [illegible] عن عمه وشيخه السيد آل احمد الملقب باچھے میاں صاحب المارهروي عن ابيه السيد حمزة عن ابيه السيد آل محمد عن ابيه قطب البركات السيد بركة الله عن ابيه السيد [illegible] عن ابيه السيد عبد الجليل عن ابيه السيد عبد الواحد البلگرامي عن [illegible] حسين عن [illegible] عن الشيخ سعد [illegible] عن الشيخ [illegible] النبي [illegible] عن السيد [illegible] عن [illegible]

عن السيد نصير الدين محمود چراغ دهلوي عن السلطان نظام الحق والدين البداؤني عن السيد فريد الحق والدين گنج شكر عن السيد قطب الحق والدين بختيار الاوشي الكاكي عن السيد الاجل سلطان الهند حبيب الله وارث النبي معين الحق والدين حسن الچشتي السجزي الاجميري رضي الله تعالى عنه [illegible] الچشتي عن ابيه الخواجه ناصر الدين ابي يوسف بن محمد الچشتي عن خاله الخواجه محمد بن ابي احمد الچشتي عن ابيه الخواجه ابي احمد الابدال الچشتي عن الخواجه ابي اسحاق الشامي عن الخواجه ممشاد علو الدينوري عن الخواجه هبيرة البصري عن الخواجه حذيفة المرعشي عن السلطان ابراهيم بن ادهم البلخي عن الخواجه فضيل بن عياض عن الخواجه عبد الواحد بن زيد عن الخواجه حسن البصري عن امير المؤمنين وامام المسلمين سيدنا علي المرتضى كرم الله تعالى وجهه عن سيد المرسلين خاتم النبيين احمد المجتبى محمد المصطفى صلى الله تعالى عليه وعليهم وسلم

قاله بفمه وامر برقمه عبد المصطفى احمد رضا
القادري البركاتي البريلوي عفي عنه
بمحمد المصطفى النبي الامي صلى الله
تعالى عليه وعلى آله وصحبه
وبارك وسلم
آمين

(तज़्किरए मशाइख़े क़ादिरिय्या रज़विय्या, स. 465, 466)

अगले हफ़्ते का रिसाला